अनुग्रह से उद्धार का क्या अर्थ है?

अंग्रेज़ी भाषा में लिखे भजन ''अमेज़िंग ग्रेस'' [जिसका हिन्दी/उर्दू अनुवाद ''फ़ज़ल अजीब'' के नाम से जाना जाता है] नि:स्वार्थ भाव से अपना जीवन परमेश्वर के राज्य को फैलाने के लिए समर्पित करने वाले इरा नॉर्थ का प्रिय गीत था। उसके द्वारा प्रारम्भ की गई ''अमेज़िंग ग्रेस'' बाइबल क्लास के छात्रों की संख्या हज़ारों तक पहुंच गई है जिनसे इरा कभी व्यक्तिगत रूप से नहीं मिले परन्तु उनसे वह एक और भी अच्छे देश में मिलकर आनन्द करेंगे।

तीन शताब्दियों से, ''अमेज़िंग ग्रेस'' ने लाखों लोगों के मनों को प्रभावित किया है। इन शब्दों को ''समझकर'' गाने वाला हर व्यक्ति पिता के हृदय के बड़प्पन की नई ताज़गी से आश्चर्य करता है। नि:संदेह, गीत की समाप्ति पर आराधना करने वाला प्रत्येक व्यक्ति विनम्र होकर, धन्यवाद सहित इन बातों को मानकर पहले से भी अधिक समर्पित हो जाता है।

इस गीत के लेखक, जॉन न्यूटन की मां सात वर्ष की आयु में उसे लंदन में छोड़कर चली गई थी और ग्यारह वर्ष की आयु में वह एक नाविक बन गया था। इसके बाद शीघ्र ही वह एक जंगली, परमेश्वर की निन्दा करने वाला और नास्तिक बन गया था। अफ्रीका से इंग्लैंड की जलयात्रा के दौरान एक जबर्दस्त तूफ़ान में सभी नाविक निराश होकर जीवित बचने की उम्मीद छोड़ चुके थे। डूब रहे जहाज़ में, वह अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए अपने पापमय जीवन पर विचार करने लगा। जहाज़ के सीधा हो जाने पर, वह प्रार्थना करने लगा। इतनी देर में उसका जीवन एक बदले हुए व्यक्ति का बन चुका था।

लंदन जाकर, न्यूटन बाइबल का अध्ययन करने लगा। फिर, जहाज़ के कप्तान के रूप में उसे अफ्रीका से दक्षिणी केरोलिना में चार्लस्टन तक हब्शियों को ले जाने के लिए गुलामों के एक जहाज़ में नौकरी मिल गई। ऐसी अमानवीयता देखकर उसका मन दहल गया। नौकरी से त्यागपत्र देते हुए, उसने इस बात की निंदा पर एक पत्र लिखा। इंग्लैंड में दोबारा उसे लिवरपूल में क्लर्क की नौकरी मिल गई और उसने चर्च जाना आरम्भ कर दिया। उनतालीस वर्ष की उम्र में वह प्रचार करने लगा और तैंतालीस वर्ष तक प्रचार करता रहा। उसके लेखों में अमेज़िंग ग्रेस नामक एक बहुत ही सुन्दर गीत है जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार गाया जाता है:

यह दुनिया होगी जल्द फ़नाह
आफ़ताब न देगा काम
पर हो ख़ुदावंद की सना
वो मेरी है चट्टान
फ़ज़ल अजीब! क्या खुश इल्हान!
कि मुझको दी नजात,
कि फेरी मेरी भटकी जान
और दूर की दिल की रात

सिखाया उसने मुझको डर,
और दिया इत्मीनान।
शीरीं था फ़ज़ल सरासर
जब लाया मैं ईमान!

खुदा के वादे बे मिसाल
पर मेरा है ईमान
वह मेरी है मीरास और ढाल
और रहेगा हर आन

जब होवे ज़िन्दगी तमाम,
रूह जिस्म का छोड़े साथ
आसमान में पाऊंगा आराम
और अबदी जलाल।[1]

लगभग 82 वर्ष की आयु में, जब न्यूटन को प्रचार न करने का परामर्श दिया गया, तो न्यूटन ने उत्तर दिया, ''क्या परमेश्वर का निंदक एक बूढ़ा अफ्रीकी बोलना बंद कर दे जबकि वह बोल सकता है?'' लंदन में जिस कलीसिया में वह प्रचार करता था उसके प्रार्थना भवन में एक पत्थर पर उसने यह लिखवाया:

> जॉन न्यूटन, क्लर्क। जो कभी नास्तिक और व्यभिचारी, अफ्रीका में गुलामों का एक सेवक था, हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह ने उसे अपने बड़े अनुग्रह से सम्भाला, सुधारा, और क्षमा किया, और उस विश्वास का प्रचार करने के लिए नियुक्त किया जिसका वह बहुत समय तक विनाश करता रहा था।

अनुग्रह के उदाहरण

नये नियम के सबसे बड़े शब्द *अगापे* (Agape) में *चैरिस* अर्थात अनुग्रह जिसका अर्थ है वह कृपा जिसके योग्य कोई न हो, न होने पर इसका गलत अर्थ मिलता है। मैं

परमेश्वर की सृष्टि की असीम सुन्दरता और विशालता (''आकाश और पृथ्वी''; उत्पत्ति 1:1) से आनन्दित होता हूं, परन्तु परमेश्वर ने मेरा कुछ देना नहीं था कि उसने इन वस्तुओं को बनाया। मैं आनन्दित होता हूं कि मैं एक जीवित प्राणी हूं, हां परमेश्वर के संसार में सब जीवित प्राणियों में प्रमुख हूं, परन्तु मुझे जीवन का दान उसने किसी प्रकार का कर्ज उतारने के लिए नहीं दिया। ऐसी कौन सी चीज़ है जो मुझे नहीं मिली ? (देखिए 1 कुरिन्थियों 4:7)। फिर कहता हूं कि, मुझे मानना पड़ेगा कि ''मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं'' (1 कुरिन्थियों 15:10)।

पुराने नियम का सबसे बड़ा शब्द हेसेढ *(hesedh)* अनुग्रह के बिना केवल एक खोल ही होता। मूल रूप से, *hesedh* का अर्थ ''झुकना, या सम्बन्ध रखना'' है। पाप से भरे, खीझे हुए क्रुद्ध कैन से बात करने के लिए पृथ्वी पर आने का समय निकालने में पिता की अनुग्रहकारी, विचारणीय, झुकने की स्थिति दिखाई देती है। पूर्ण अधिकार प्राप्त, संसार का व्यस्त परमेश्वर आज्ञा न मानने वाले कैन की अनदेखी कर सकता था। परन्तु अनुग्रह सब अधिकारों से ऊपर जाता है। अनुग्रह से ही पिता उस एक व्यक्ति के साथ निजी काम से स्वर्ग छोड़कर गया। ''जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है'' (भजन संहिता 103:13, 14)।

क्योंकि पुराने और नये दोनों नियमों में परमेश्वर वही है (''क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; ...''; मलाकी 3:6), इसलिए लूका 15 में खोए हुए पुत्र के दृष्टांत में नये नियम द्वारा दिखाए उसके चित्र से हैरानी नहीं होती। उसे उस पिता के रूप में दिखाया गया है जो करुणा से भरा हुआ, पापी पुत्र की ओर भागता हुआ, झुकता है और यहां तक कि मैल से भरे, फटे हाल, नंगे पांव आ रहे अपने बच्चे को गले लगाकर चूम रहा है (आयत 20)। कठोर न्याय कभी झुकता नहीं है, परन्तु अनुग्रह झुक जाता है।

यीशु अनुग्रह का शारीरिक रूप है। उसने ''यरूशलेम को जाने का विचार दृढ़ किया'' जहां उसने क्रूस का दुख सहा, लज्जा को तुच्छ जाना और अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना की, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 9:51; 23:34; इब्रानियों 12:2)। हर व्यक्ति को क्रूस की भुजाओं के नीचे अंधेरे में कुछ पल बिताने चाहिए (जैसे यूहन्ना 19:25-27 में उन चार लोगों ने बिताए थे)। वहां बैठकर, हम यह नहीं कह पाएंगे कि कलवरी पर परमेश्वर सब लोगों पर अपनी वाचा लागू कर रहा था, न ही यह कि लहू से बंधी वाचा को स्वीकार करके पापी लोग परमेश्वर के साथ एक ''जागीरदारी संधि'' कर रहे थे। इसके स्थान पर, यह पता चलेगा कि अनुग्रह से भरा हुआ परमेश्वर दुखी मन से देख रहा है और पापियों से अपने बच्चे बनने का आग्रह कर रहा है। ''देखो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी: इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना'' (1 यूहन्ना 3:1)।

क्रूस की बात सुनने वालों को चाहिए कि यीशु को बड़े भाई के रूप में पापियों से बिनती करते हुए देखें कि वे अपने आपको उसके लहू से धो लें ताकि ''वह उन्हें भाई कहने

से नहीं'' लजाए (इब्रानियों 2:11)। उनके पाप चाहे गहरे भरे रंग के क्यों न हों, अर्थात चाहे वे किरमिजी रंग के हों, फिर भी वे मन से यह गा सकेंगे:

यीशु का अद्‌भुत अनुग्रह,
जो मेरे हर पाप से बढ़कर है;
मेरी जीभ उसका वर्णन कैसे करेगी?
उसकी स्तुति कहां से शुरू करूं?
मेरे सब बोझ लेकर,
मेरी आत्मा को स्वतन्त्र किया,
यीशु का अनुग्रह मुझ पर हुआ है।
यीशु के अद्‌भुत अनुग्रह की तुलना किससे करूं,
वह तो लहराते समुद्र से गहरा है;
वह अद्‌भुत अनुग्रह मेरे लिए काफ़ी है,
मेरे अपराधों के दायरे से विशाल
मेरे सब पाप और लज्जा से कहीं बढ़कर
हां यीशु के बहुमूल्य नाम को ऊंचा करो
उसके नाम की महिमा हो![2]

अनुग्रह का दुरुपयोग हुआ

उद्धार कमाया?

कुछ लोग यह सोचकर कि उद्धार मनुष्य के कर्मों से पाया जाता है, सद्‌गुण के कामों को अनुग्रह से जोड़कर, अनुग्रह की सुगंधित पत्तियों को पांवों तले रौंद देते हैं। रोमन कैथोलिक चर्च में एक आधिकारिक ''अच्छाई का भण्डार'' है जहां ''परगेटरी'' में ठहरने के समय को कम करने, बुरे कर्मों के प्रभाव को कम करने के प्रयास में अच्छे कर्म जमा कराए जाते हैं। तीर्थयात्राओं और सेक्रामेंटों से विश्वासी कैथोलिक सदस्यों को ''अनुग्रह दिया जाता'' है। इसके विपरीत, नया नियम अनुग्रह और उद्धार से किसी भी शुभ कर्म को जोड़ने की मनाही करता है। ''यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं; नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा'' (रोमियों 11:6)।

एक तरह से, अपने उद्धार के लिए ''काम करना'' आवश्यक है (फिलिप्पियों 2:12)! परन्तु एक अन्य दृष्टिकोण से, अपने कर्मों से कोई स्वर्ग में नहीं जा सकता। ''इसी रीति से तुम भी, जब उन सब कामों को कर चुको जिनकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, हम निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है'' (लूका 17:10)।

मेरे हाथों का परिश्रम
व्यवस्था की बातें पूरी नहीं कर सकता;

मेरा जोश कितना भी क्यों न हो
मेरे आंसू सदा तक क्यों न बहें,
सब मिलाकर मेरे पाप का प्रायश्चित नहीं कर सकते,
तू ही मेरा उद्धार कर केवल तू ही।[3]

केवल अनुग्रह?

जितनी महत्वपूर्ण उद्धार पाने की परमेश्वर के अनुग्रह की शक्ति है, उतने ही आवश्यक ईश्वरीय अनुग्रह को व्यवहार में लाने के लिए कर्म हैं। यदि बाइबल केवल अनुग्रह से ही उद्धार की शिक्षा देती, तो किसी का भी नाश न होता, क्योंकि ''परमेश्वर के अनुग्रह से'' यीशु प्रत्येक मनुष्य के लिए मरा (इब्रानियों 2:9)। मनुष्य के लिए उसे ग्रहण करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह से जुड़ा होना आवश्यक है। परमेश्वर के अनुग्रह से हाजरा के लिए पानी का कुआं खोदा गया, परन्तु यदि अब भी वह कुछ नहीं करती तो उसने प्यास से मर जाना था: ''सो उसने जाकर थैली को जल से ...'' भरा (उत्पत्ति 21:19)।

केवल, लाल सागर से रास्ता देने के परमेश्वर के अनुग्रह के काम से ही इस्राएलियों ने बाहर नहीं निकलना था। उनके लिए चलना भी आवश्यक था, परन्तु उनमें से किसी ने भी फिरौन से छुटकारा अपने कर्मों से नहीं पाया था। वे गा सकते होंगे, ''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर की ओर से दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे'' (इफिसियों 2:8, 9)।

सो आज जब कोई पापी पानी के बपतिस्मे से बाहर आता है, तो वह अपने किए कर्मों और कमाए हुए उद्धार के लिए अपनी पीठ नहीं थपथपाता। वह जानता है कि वह अपने किसी भी कर्म से नहीं बल्कि अनुग्रह से ही धर्मी ठहराया जाता है (तीतुस 3:5-7)। आज्ञा न मानने वाला व्यक्ति अनुग्रह से कभी भी धर्मी नहीं ठहरेगा (यूहन्ना 3:36; इब्रानियों 5:9)।

बपतिस्मे के बाद का अनुग्रह?

कुछ प्रचारक अनुग्रह का इतना दुरुपयोग करते हैं कि वे यह कहने लगते हैं कि नये नियम में मसीही व्यक्ति के लिए बपतिस्मे के बाद अनुग्रह की कोई बात नहीं है। उनका दावा होता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक के बाद सब पुस्तकें ''प्रेम पत्र ही हैं अर्थात अनुग्रह ही उनके लिए काफ़ी है।'' वे इस बात को न समझते हुए कि प्रत्येक युग में व्यवस्था (उत्पत्ति 18:19; भजन 119:97; रोमियों 8:2) पवित्र, ठीक और अच्छी है (रोमियों 7:12) ''व्यवस्था'' शब्द को ही बुरा मानते हैं। वे यह नहीं समझ पाते कि अनुग्रह व्यवस्था के द्वारा ही काम करता है (तीतुस 2:11-15)।

रोमियों 6:14 और गलतियों 5:18 में जोड़रहित (अनारथरस) ''व्यवस्था''[4] शब्द के उसके दुरुपयोग से नये नियम की बहुत सी आयतों के बारे में विरोधाभास बन गया है जो मसीही लोगों को सिखाती हैं कि वे मसीह की व्यवस्था के अधीन हैं (यशायाह 2:1-4; यिर्मयाह 31:31-34; रोमियों 3:27; 8:2; 1 कुरिन्थियों 9:21; गलतियों 6:2; याकूब 2:12)।

ये प्रचारक पुराने नियम का विरोध केवल ''लिखित नियम'' कहकर करते हैं जिससे मसीही लोग छूट गए हैं। क्योंकि ''प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है'' (रोमियों 13:10; देखिए गलतियों 5:14), इसलिए वे कहते हैं कि मसीही लोगों के लिए प्रेम को छोड़ कोई व्यवस्था नहीं है, जो कि ''लिखित नियम'' में नहीं मिलता। अपनी शिक्षा से ये लोग बपतिस्मे या प्रभु भोज की शिक्षा में बने न रह सके, क्योंकि ''प्रेम'' शब्द में ऐसे विषय नहीं मिलते।

तर्कसंगत रूप में, इन प्रचारकों ने अपने आपको प्रेम-सदाचारियों के रूप में अलग कर लिया है जो कहते हैं कि यदि प्रेम से किसी बात की प्रेरणा मिलती है, तो कोई भी काम गलत नहीं है, चाहे वह गर्भपात हो या आसान और पीड़ारहित मृत्यु। किसी भी बात को गलत नहीं माना जाता: ''कुछ भी सुनिश्चित नहीं है'' जूलियन हक्सले का कहना था। डॉ. हार्वे कॉक्स के अनुसार, परिस्थितियों के बदलने से नैतिक निर्णय भी बदल जाते हैं। ''यदि अच्छा लगता है, तो कर लो।'' यह विचार अश्लीलता या समलैंगिकता की बुराई करने से इन्कार करता है अर्थात इसके लिए ''व्यभिचार'' और ''पाप'' शब्दों से कोई फर्क नहीं पड़ता। मियामी के मनोवैज्ञानिक ग्रेनविल्ल फिशर का कहना था, ''सेक्स कोई नैतिक प्रश्न नहीं है।'' इसके विपरीत उसका कहना था कि मापदण्ड यह होना चाहिए कि ''क्या यह सामाजिक तौर पर व्यवहार्य है, क्या यह व्यक्तिगत रूप से स्वास्थ्यवर्धक और लाभदायक है, क्या इससे व्यक्ति के जीवन में लाभ होगा?'' इस प्रकार प्रेम तथा अनुग्रह की पवित्र शिक्षाओं का हवस और हर प्रकार की अनैतिकता को छुपाने के लिए दुरुपयोग किया जाता है।

सच्चाई यह है कि मसीही लोगों के लिए एक लिखित विधान अर्थात नया नियम है। परमेश्वर को जानने का दावा करने वाला परन्तु उसकी आज्ञाओं को न मानने वाला व्यक्ति ''झूठा है'' (1 यूहन्ना 2:4), और उसकी आज्ञाएं कहीं और नहीं बल्कि नये नियम में ही मिलती हैं (मत्ती 10:40; लूका 10:16; यूहन्ना 16:13)। सही सोच वाला व्यक्ति बोये गए वचन को विनम्रतापूर्वक अपने नैतिक मार्गदर्शक के रूप में ग्रहण कर लेता है (याकूब 1:21), इसके बिना वह इधर-उधर भटकता ही है।

अगस्टिन के शब्द समझ आ जाएं तो वे सत्य और अच्छे हैं: ''प्रेम करो और वही काम करो जो आप करना चाहते हो।'' बिना लिखित आज्ञाओं के प्रेम के पुजारियों और प्रचारकों को लिखित आज्ञाओं के बिना प्रेम की नैतिकता की समझ नहीं आती। जिस प्रेम को अगस्टिन ने मुख्य और एकमात्र के रूप में ऊंचा किया था उसका आरम्भ परमेश्वर के लिए प्रेम और अन्त बाइबल के प्रति सम्मान के साथ हुआ था। उसकी सोच के अनुसार, यदि कोई परमेश्वर से इतना प्रेम करता है जितना उसे करना चाहिए, तो वह परमेश्वर की सभी आज्ञाओं को भी मानेगा। यदि कोई सर्वोत्तम प्रेम पर ध्यान देता है, तो वह हर उस काम को करने के लिए ''तैयार'' होगा जिसकी अनुमति परमेश्वर देता है, और हर उस काम को करने से इन्कार करेगा जिसकी परमेश्वर ने निंदा की है। परमेश्वर की इच्छा ही मसीही व्यक्ति की इच्छा बन जाती है। यदि कोई सचमुच परमेश्वर से प्रेम करता है, तो उसकी इच्छा पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा मानने की होती है। परमेश्वर उसका ''सब कुछ'' (कुलुस्सियों 3:11) बन जाता है, क्योंकि ''पुराना मनुष्यत्व'' मर गया है (रोमियों 6:6;

इफिसियों 4:22) और उसका ''जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है'' (कुलुस्सियों 3:3)। उसने स्वेच्छा से परमेश्वर को अनुमति दी है कि वह उसके जीव को ढांपे। ''हमारी आत्माएं तब तक बेचैन हैं जब तक तुझ में चैन नहीं पातीं।'' इस समझ के अनुसार, यह बात बड़े ही सुन्दर ढंग से सत्य है कि यदि कोई प्रेम करता है, तो वह अपनी इच्छा से कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र है।

पापों का अंगीकार नहीं?

कहते हैं कि परमेश्वर का नि:शुल्क अनुग्रह इतना गहरा और व्यापक है कि एक मसीही को अपने पापों का अंगीकार करने की आवश्यकता नहीं है; और यदि वह ऐसा करता है, तो वह यह दिखाता है कि उसे परमेश्वर के अनुग्रह में इतना विश्वास नहीं है। एक प्रचारक ने लिखा है:

> पहला यूहन्ना 1:9 यीशु के लहू के द्वारा पापों की क्षमा पाने के लिए विधिपूर्वक अंगीकार की शिक्षा नहीं देता ... मेरा मानना है कि इस पद में यह शिक्षा है कि हमें इस तथ्य को मानना चाहिए कि हम पापी हैं। हम परमेश्वर के साथ सहमत हैं (''अंगीकार'' यूनानी शब्द *homologeo* का अनुवाद है = ''वही बात कहना'' या ''सहमत होना'') कि हम पापी हैं।

पापों के अंगीकार को टालने के कारण इस व्यक्ति ने *homologeo* शब्द का दुरुपयोग किया। यूनानी साहित्य में इस शब्द का अर्थ ''से सहमत होना'' है, परन्तु नये नियम के किसी लेखक ने इसका इस्तेमाल इस प्रकार नहीं किया। मत्ती 7:23 में बोलते हुए यीशु के मन में इसका बिल्कुल ही विपरीत अर्थ था: ''मैं ने तुम को कभी नहीं जाना।'' यदि कोई यह कहे कि हाकिमों ने यीशु पर विश्वास कर लिया परन्तु उससे सहमत (*homologeo*) नहीं हुए, तो यूहन्ना 12:42 का अर्थ कुछ नहीं निकलेगा। नये नियम का मुख्य अर्थ मसीह का अंगीकार करने की तरह (रोमियों 10:9; 1 तीमुथियुस 6:12; 1 यूहन्ना 2:23; 4:15), अपने पापों का अंगीकार करने की तरह (मत्ती 3:6; याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9) ''अंगीकार करना अर्थात मानना'' होता है।

दृढ़तापूर्वक यह कहना कि यदि किसी मसीही का व्यवहार पश्चात्तापी और भरोसेयोग्य है तो उसके पापों की क्षमा अपने आप ही हो जाती है, परमेश्वर के अनुग्रह का एक और दुरुपयोग है। ऐसी शिक्षा न केवल यूहन्ना के स्पष्ट अर्थ ''यदि हम अपने पापों को मान लें'' (1 यूहन्ना 1:9) का ही बल्कि सुलैमान की बुद्धि का भी विरोध करती है: ''जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाएगी'' (नीतिवचन 28:13)।

एक मसीही की क्षमा को बिना किसी अंगीकार के बनाने का प्रयास करने वाले न केवल नीतिवचन 28:13 और 1 यूहन्ना 1:9 से ही बल्कि लूका 11:4 से भी झगड़ते हैं:

''हमारे पापों को क्षमा कर।'' यह शिक्षा देने वाले कि ''प्रभु द्वारा बताई गई नमूने की प्रार्थना में यीशु ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि हमारी क्षमा इस बात से जुड़ी है कि हम दूसरों को कैसे क्षमा करते हैं'' को निकाल देते हैं। सम्बन्ध तो है, परन्तु दूसरों को अपने आप क्षमा नहीं मिल जाती। बल्कि यह क्षमा तो तभी हो सकती है ''यदि वह तेरी सुने'' (मत्ती 18:15) और ''यदि पछताए'' (लूका 17:3)। गलती को मानने के लिए ये आवश्यक शर्तें हैं।

पापों का आरोप नहीं लगा?

यह विचार चौंकाने वाला है कि पापों का अंगीकार करने वाले मसीही को अनुग्रह की समझ न हो! यह शिक्षा और भी चौंकाने वाली है कि पहले उस पर पापों का आरोप नहीं लगा। क्षमा पर पिछली चर्चा इस विचार से अपने आप अनावश्यक हो जाती है। यदि मसीही व्यक्ति पर कभी पापी होने का आरोप हीं नहीं लगा, तो क्षमा की बात करने का कोई अर्थ नहीं है। सुसमाचार के एक भ्रमित प्रचारक ने लिखा है, ''रोमियों 4:8 एक व्यक्ति (परमेश्वर के बालक) की बात करता है जिस पर उसके पाप का आरोप नहीं है। हां, मेरा मानना है कि अनुग्रह ही है जिसमें मसीही लोग बने रहते हैं।''

इस भाई को रोमियों 4:8 की समझ नहीं आई। पौलुस भजन 32:1, 2क से उद्धृत कर रहा था: ''क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढांपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले!'' इन आयतों में दाऊद का चित्रण है जिस पर पाप करने का आरोप था (2 शमूएल 12:13), परन्तु बाद में उसे क्षमा कर दिया गया। परन्तु उसे तब तक क्षमा नहीं मिली थी जब तक उसने अपने पाप का अंगीकार नहीं किया कि ''मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है'' (2 शमूएल 12:13); ''मैंने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अपना अधर्म न छिपाया ...'' (भजन संहिता 32:5)। इस प्रकार रोमियों 4:8 केवल तभी लागू होता है जब कोई अपने पाप का अंगीकार करता है (जैसे 1 यूहन्ना 1:9 में)। इस तरह अपने पाप को न मानने वाला उस व्यक्ति की तरह है जो ''अपने अपराध छिपा रखता है'' और ''सुफल नहीं होता'' (नीतिवचन 28:13 की तरह)। परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता। वह पाप करने वाले किसी भी व्यक्ति को छूट नहीं देता (परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने वाले को; 1 यूहन्ना 3:4); और अपने पाप का अंगीकार करने वाले किसी भी मसीही को, दोषी नहीं ठहराता।

नाशवान मनुष्य अनुग्रह को सीमित करने की गुस्ताखी करता है?

तर्क दिया जाता है कि किसी भी मनुष्य को इतना ज्ञान नहीं है कि वह बता सके कि परमेश्वर का अनुग्रह कैसे होता है और कैसे नहीं। मसीही आराधना में गाने के साथ साज़ का इस्तेमाल करने का बहाना बनाने के लिए भावना का इस्तेमाल किया जाता है। पर उसी भावना का इस्तेमाल पवित्र जल, धूप जलाने, समलैंगिकता को स्वीकार करने और किसी भी और बात को मानने के लिए भी तो किया जा सकता है! बाइबल का अध्ययन करके, यह पता चल सकता है कि परमेश्वर के अनुग्रह में कौन सी बात सम्मिलित है और कौन सी

नहीं। सब प्रकार के पापों को मान लेना अनुग्रह के अधीन आता है, जबकि जिन पापों का अंगीकार नहीं किया जाता उन्हें अनुग्रह में शामिल करना सम्भव नहीं है (1 यूहन्ना 1:9)।

जो कोई अनजाने में पाप करता है? अज्ञानता कोई बहाना नहीं है (लैव्यव्यवस्था 5:17), परन्तु प्रेम करने वाला परमेश्वर धर्मी है और अज्ञानता में पाप करने वालों से अधिक कठोरता से पेश नहीं आता (लूका 12:47, 48; 1 तीमुथियुस 1:13)। बुद्धिमान व्यक्ति ''सत्य को जानने'' के लिए (यूहन्ना 8:32) हर रोज़ पवित्र शास्त्र में से खोज करके (प्रेरितों 17:11) अनजाने में किए गए पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करेगा: ''मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर'' (भजन 19:12)। वह पाप रहित होने के लिए पूरी कोशिश यत्न करेगा (1 यूहन्ना 3:9)।

सारांश

यह सिखाना पवित्र शास्त्र के साथ युद्ध करना है कि कलीसिया के अन्दर या बाहर आज्ञा न मानने वालों के लिए परमेश्वर का अनुग्रह एक ढकना है। सुसमाचार को मानकर, और अपने पापों का अंगीकार निरन्तर करते रहकर एक मसीही को कितना धन्यवाद करना चाहिए कि हमारे उद्धारकर्त्ता का अनुग्रह एक आशीषित और विश्वसनीय सामर्थ और ढकना है:

हमारे प्रेमी प्रभु का अद्भुत अनुग्रह
वह अनुग्रह जो हमारे पाप और हमारे दोष से अधिक है,
कलवरी की पहाड़ी पर उस ओर बहाया गया,
जहां मेमने का लहू बहा था।

दाग़ इतना बड़ा है कि हम उसे छुपा नहीं सकते,
इसे धोया किससे जा सकता है?
देखो, वह गहरे लाल रंग की धारा बह रही है:
आज तुम बर्फ से भी सफ़ेद हो सकते हो।

अद्भुत, अविनाशी, अद्वितीय अनुग्रह,
विश्वास करने वालों पर मुफ्त में किया जाता है;
तुम जो उसका मुख देखने के लिए खड़े हो,
क्या तुम इसी घड़ी अनुग्रह को लोगे?

अनुग्रह, अनुग्रह परमेश्वर का अनुग्रह,
अनुग्रह जो क्षमा करके अन्दर से धोएगा;
अनुग्रह, अनुग्रह, परमेश्वर का अनुग्रह
अनुग्रह जो हमारे सारे पाप से बढ़कर है।[5]

जैसे पैट फलैनिगन ने कहा है, ''अनुग्रह का अर्थ वह प्राप्त करना है जिसके हम योग्य नहीं हैं। अनुग्रह का अर्थ वह नहीं प्राप्त करना है जिसके हम योग्य हैं।''

पाद टिप्पणियां

[1]जॉन न्यूटन, ''अमेज़िंग ग्रेस,'' *सॉन्ग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संक. व. संपा. आल्टन एच. हॉवर्ड वेस्ट (वेस्ट मोनरो, La.: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994) का हिन्दी रूप। [2]हाल्डर लिलेनस, ''वंडरफ़ुल ग्रेस ऑफ़ जीज़स'' *सॉन्ग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संक. व. संपा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, La.: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [3]ए. एम. टॉपलेडी, ''रॉक ऑफ़ एजस।'' हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., Inc. द्वारा कॉपीराइट 1993© । सर्वाधिकार सुरक्षित। अंतर्राष्ट्रीय कॉपीराइट सुरक्षित। [4]''अनारथरस'' शब्द केवल उस शब्द की ओर संकेत करता है जिसका कोई उपपद नहीं है। अंग्रेज़ी में यह अधिक स्पष्ट होता है। जहां ''anarthrous law,'' ''*the* law'' के बजाय, सामान्य रूप में ''law'' के लिए है। [5]जूलिया एच. जॉनस्टन, ''ग्रेस ग्रेटर दैन अवर सिन,'' *सॉन्ग्स ऑफ़ फ़ेथ प्रेज़,* संक. व सम्पा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, La.: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।